रोकथाम के उपाय: रेशों से प्रभावित भागों को निकालकर नष्ट कर दें। रसायन उपचार के लिए इन्डोक्साकार्ब 14.5% की 2.5 मिलीलीटर या लुफेनुरोन 5.4% की 1.6.7 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पाने में मिलाकर छिड़काव करें या 2% नीम तेल का छिड़काव करें।

❖ **तने की मक्खी: पहचान के लक्षण:**
छोटा पीले रंग की भुनगा और प्रौढ़ काले रंग की मक्खी होती है।

क्षति के लक्षण: अंकुरण के समय ही पौधों का पीला पड़कर सुख जाना।

रोकथाम के उपाय: फली की मक्खी का अनुसरण करें।

❖ **सफेद मक्खी: पहचान के लक्षण:** ये दिखने में बहुत ही छोटी होती है। शरीर का रंग पीला जिसके ऊपर सफेद रंग के दो जोड़ी पंख होते है जो मोमी पाउडर से ढके होते हैं।

क्षति के लक्षण: इसके प्रौढ़ व शिशु पत्तियों के नीचे की सतह पर बैठकर उनसे रस चूसते रहते हैं। प्रभावित पत्तियॉ मुड़ने लगतीं और बाद में पीली पड़कर सूख जाती हैं। यह पीली धारी विषाणु के लिए एक रोगवाहक का कार्य भी करता है।

रोकथाम के उपाय: इसके लिए क्लोरपाईरिफोस की 4 ग्राम मात्रा से एक किलोग्राम बीज को उपचारित करे। डेमेटोन 25 ई.सी. की 200 मिलीलीटर मात्रा को प्रति एकड में छिड़काव करें।

❖ **पत्ती लपेटक कीट: पहचान के लक्षण:**
इनकी सुंडिया सुरवात में हल्के पीले रंग की जो बाद में हरे रंग की हो जाती है। इनके प्रौढ़ शलभ पीले भूरे रंग के होते है और इनके प्रथम जोड़ी पंखो पर काली धारियाँ होती है।

क्षति के लक्षण: पत्तियों के सिरे नीचे की तरफ मुड़े होते है या दो या दो से अधिक पत्तियां आपस में जोड़ी होती है जिनके अन्दर दिन के समय इसकी सुंडी बैठकर पत्ती के हरे भाग को खाती है।

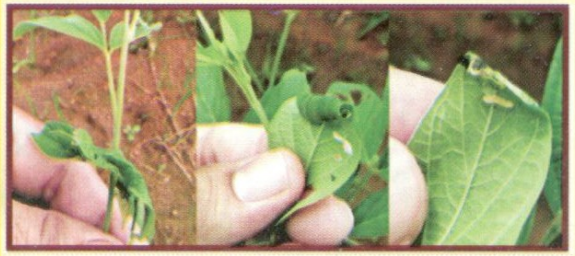

रोकथाम के उपाय: पत्तियों को जाले से अलग कर देना चाहिए। सुंडियो को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए। क्यूनोल्फोस 1.5 प्रतिशत की 23 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

इनके अतिरिक्त इसमें नीली तितली, हरे रंग की तितली, पिन फली बेधक, मटर का फली बेधक, व छेदक, पत्ती का फुदका, पत्ती का धारीदार कीड़ा, फूल खाने वाला भृंग आदि कीड़ो का प्रकोप होता है।

विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें–
डॉ. एस. एस. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 789746699
ई-मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी (उ.प्र.) 284003

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.–फोल्डर/2021/22

अरहर की फसल में लगने वाले कीड़े एवं उनकी रोकथाम

सुन्दर पाल
ऊषा
सुशील कुमार चतुर्वेदी

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003 उत्तर प्रदेश (भारत)
Website: www.rlbcau.ac.in

अरहर की फसल में लगने वाले कीड़े एवं उनकी रोकथाम–

अरहर एक बहुत ही महत्वपूर्ण दलहन की फसल है। यह सूखे के प्रति सहनशील और वायुमंडल से नाइट्रोजन को भूमि में भण्डारित भी करती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 21% होने के साथ ही साथ आयरन व इओडीन भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इस फसल में लगने वाले मुख्य कीड़े व उनकी रोकथाम निम्न प्रकार है:

❖ फली छेदक कीड़ा: पहचान के लक्षण:

इसकी सूंडी पीले, हरे, गुलाबी, नारंगी, भूरे या काले रंग की होती है जिसके शरीर के दोनों तरफ गहरे काले रंग की धारियां होती है।

क्षति के लक्षण: ये सुंडिया छोटी और ऊपर की पत्तियों को खाती हैं। ये फलियों में बन रहे दानों को खाकर नष्ट कर देती हैं। इनके शरीर का आधा हिस्सा फली के अन्दर व आधा हिस्सा बाहर रहता है।

रोकथाम के उपाय: सुंडियो को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिये। खेतो में शाम के समय कूड़े करकट के छोटे छोटे ढेर लगाये, ऐसा करने से उनमें रात के समय सुंडिया घुस जाती हैं और सुबह के समय सभी ढेरों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। 12 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें। जब इनकी जनसंख्या 1 सुंडी प्रति दो पौधा दिखाई दे तब रसायन उपचार के लिए इन्डोसाकार्ब 14.5% की 2.5 मिलीलीटर या लुफेनुरोन 5.4% की 1.6.7 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पाने में मिलाकर छिड़काव करें या 2% नीम तेल का छिड़काव करें।

❖ प्लूम शलभ: पहचान के लक्षण:

इसकी सुंडिया हरे भूरे या पीले रंग की और शरीर पर झालरदार बाल होते है। प्रोढ पतले पंखो के साथ नाजुक व भूरे रंग के पतंगे होते है।

क्षति के लक्षण: फली के ऊपर छोटे छोटे छिद्र दिखाई देते है।

रोकथाम के उपाय: जब इनकी जनसंख्या 5 सुंडी प्रति पौधा दिखाई दे तब मोनोक्रोटोफोस 36 एस. एल. की 1.6 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पाने में मिलाकर छिड़काव करें या 2% नीम तेल का छिड़काव करें।

❖ फली की मक्खी: पहचान के लक्षण:

यह घरेलू मक्खी के समान दिखाई देती है और इसके शरीर के पिछले हिस्से पर काले रंग के धब्बे दिखाई देते है। इसके पंखों के आधार पर भूरे पीले रंग के धब्बे होते है। इसका घुन सफेद रंग का होता है।

क्षति के लक्षण: फलियों के ऊपर छोटे छोटे छेद दिखाई देते है और जिनके अन्दर दाने सिकुड़े हुये, धारीदार और आंशिक रूप से पके हुए दिखाई देते है।

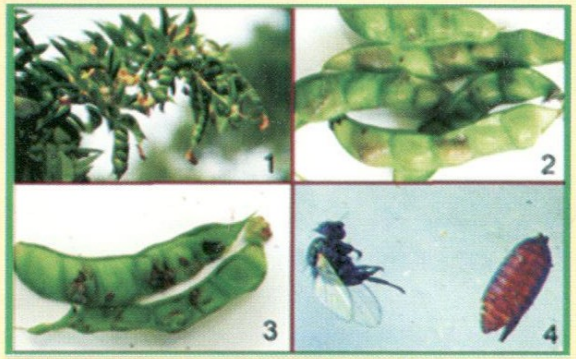

रोकथाम के उपाय: अंतर–फसल के लिए ज्वार, मक्का या मूंगफली की फसल को उगाये। फसल चक्र अपनाये। डेल्टा मेथ्रिन 2.8 ई.सी. की 1 मिलीलीटर मात्रा या मोनोक्रोटोफोस 36 एस. एल. की 1.6 मिलीलीटर मात्रा को, एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या 2% नीम तेल का छिड़काव करे।

❖ फली चूसक कीड़ा: पहचान के लक्षण:

शिशु अवस्था में यह गहरे भूरे रंग के और प्रौढ़ होने पर भूरे काले रंग के हो जाते है।

क्षति के लक्षण: फलियों के ऊपर काले धब्बे पड़ जाते हैं। फलियां पकने से पहले ही झड़ जाती हैं। फलियों में दानों का आकार छोटा और सिकुड़ा हुआ होता है।

रोकथाम के उपाय: खेतो में पक्षियों के बैठने के लिए 'T' आकार के 50 लकड़ी के अड्डे प्रति हेक्टेअर लगाये। स्पाईनोसेड 45 एस.सी. की 150 मिलीलीटर मात्रा को प्रति हेक्टेअर प्रयोग करे।

❖ माहू: पहचान के लक्षण:

शिशु और प्रौढ़ दोनों ही गहरे हरे रंग के होते हैं और इनके उदर पर दो लम्बी सी संरचना होती है जो कि प्रौढ़ में आसानी से देखी जा सकती है।

क्षति के लक्षण: इनके शिशु और प्रौढ़ दोनों ही पौधे के मुलायम भागों से रस चूसकर पौधों को कमजोर बना देते है। पौधों पर एक बड़ी संख्या में चीटियों का दिखाई देना इनकी उपस्थिति को दर्शाता है। ये मीठे स्राव को निकालते रहते है जिसके कारण फफूंदी का भी आक्रमण पौधों पर हो जाता है और पौधों के प्रभावित भाग काले पड़ने लगते है।

रोकथाम के उपाय: इमिड़ाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. की 5 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। 5 प्रतिशत चीनी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

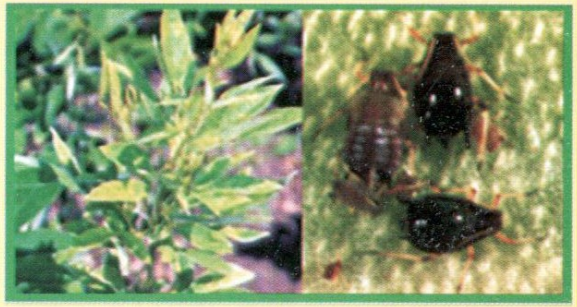

द्यब्बेदार कीट: पहचान के लक्षण:

इसकी सुंडिया हरे भूरे रंग की होती हैं। इसके शरीर के प्रत्येक खंड पर दो काले धब्बे होते हैं। इनके प्रौढ़ शलभ के पहले जोड़ी पंखों, हल्के भूरे रंग के और पिछले जोड़ी पंखों के किनारे भूरे रंग के निशान के साथ सफेद रंग के होते हैं।

क्षति के लक्षण: इसके कारण कलियों, फूलो और फलियों पर छोटे छिद्र दिखाई देते हैं। प्रभावित पौधों पर क्षतिग्रस्थ फूल और फलियां रेशो से बंधी होती हैं। जिनके अन्दर इनकी सुंडियाँ उपस्थित होती हैं और अन्दर ही रहकर इनको खाती रहती हैं।